July 2023

Monthly Magazine
Year 9 Issue 7

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सतयुग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्‌घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

॥ 卐 ॥

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

नारायण नारायण

बचपन में हमारे बाऊ जी हमें हमेशा कहते थे कि अच्छी आदतों वाली सहेलियाँ बनाओ। ऐसी सहेलियों के साथ रहो जिनसे तुम कुछ अच्छा सीख सको, जिन्हें तुम कुछ अच्छा सिखा सको। आज तुम किससे मिलते हो किससे दोस्ती करते हो किसके साथ रहते हो इस पर आपका आने वाला कल टिका हुआ है। बाऊ जी इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि हम कैसी मैगज़ीन और कहानियों की किताबें पढ़ रहे हैं। हमारे घर में फ़िल्मी पत्रिकाओं व ऐसे साहित्य के आने पर रोक थी जो हमारे बालमन पर ग़लत असर डाल सकती थीं। घर में सदैव बहुत ही सात्विक और धार्मिक माहौल रहा। हम राम - राम की धुन के साथ बड़े हुए और यह धुन हमारा जीवन बन गई। यह राम नाम सांसों में बिना किसी प्रयास के ऐसा समाया हुआ है कि सोते–जागते हर एक सांस के साथ राम नाम स्वतः ही निकलता है।

बचपन की अच्छी संगत ने परिवार के महत्व को समझाया, रिश्तों के महत्व को समझाया, यह समझाया कि जीवन तभी सार्थक है जब अपने साथ-साथ दूसरों की भलाई और हित के लिए जिया जाए। सर्वोत्तम देने का भाव अच्छी संगति का ही परिणाम है। बाऊ जी हमेशा कबीरदास का एक दोहा हमें सुनाया करते थे,

संगत कीजे साधु की कभी न निष्फल होय ।
लोहा पारस पारस ते, सो भी कंचन होय ।।

अर्थात् संतों की संगत करें, यह कभी निष्फल नहीं जाती, जैसे पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है वैसे संतों के वचनों को ध्यानपूर्वक सुनने से उनका पालन करने से मनुष्य सज्जन बन जाता है।

हम सभी बहन भाइयों ने बाऊ जी की इस सीख का आजीवन पालन किया और आज हम एक संतुष्ट जीवन जी रहे हैं।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-
संध्या गुप्ता
09820122502
-: प्रधान कार्यालय :-
नारायण भवन
टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़
गोरेगांव वेस्ट, मुंबई
-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	राधिका अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मालेगांव	आरती दी	9518995867
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चेदा कावरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबर्ली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

卐

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

अभी पिछले दिनों एक बहुत पुरानी सहेली से मिलना हुआ । एक बार तो उसे पहचानने में थोड़ा समय लगा । उसका चेहरा जो हमेशा बुझा-बुझा रहता था, एक अलग से तेज से दमक रहा था। उसकी बॉडी लैंग्वेज से जो गर्व झलकता था उसका स्थान अब सौम्यता और विनम्रता ने ले लिया है । उसका बहुत ही प्यार से मिलना, उत्साह से मिलना और उसके भीतर के परिवर्तनों ने मुझे यह कहने पर मजबूर कर दिया, 'अरे तुम तो पूरी तरह बदल गई हो ।' मेरे यह कहते ही वह बोली संगत का असर है । आजकल मैं एक सतसंग से जुड़ी हूँ । उस सतसंग को सुनने के बाद यह परिवर्तन मेरे भीतर स्वतः ही आ गया है । सच कहूँ तो मेरे साथ- साथ मुझ से जुड़ा हर व्यक्ति मेरे भीतर आए इन परिवर्तनों से खुश है।

अन्य कई औपचारिक बातों के बाद हमने एक दूसरे से विदा ली। मैंने उसका धन्यवाद दिया क्योंकि उसने मुझे सतयुग पत्रिका के लिए एक नया विषय दे दिया- संगति का असर ।

जी हाँ दोस्तों इस बार का अंक 'संगति किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करती है' विषय पर है।

आप सब अच्छी संगति में रहते हुए सप्त सितारा जीवन जियें इन शुभकामनाओं सहित

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net
narayanreikisatsangparivar
@narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

संग अथवा संगति का अर्थ है- साथ। हम जिन व्यक्तियों के सानिध्य में रहते हैं, वह हमारी संगति कहलाती है। संगति का व्यक्ति के चरित्र पर बहुत बड़ा एवं महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

यह संगति ही है, जो आपके अवगुणों को गुणों में परिवर्तित कर सकती है। संगति द्वारा व्यक्ति में सद्गुण तो आते हैं, किंतु वहीं यदि संगति अच्छी ना हो, तो व्यक्ति के अच्छे गुण भी नष्ट हो सकते हैं । चंद्रगुप्त मौर्य को आचार्य चाणक्य का साथ नहीं मिलता तो शायद वह इतने बड़े सम्राट नहीं बनते और यदि कौरवों को मामा शकुनि की बुरी संगत नहीं मिलती तो शायद महाभारत नहीं होती और यदि कैकई को मंथरा नहीं मिलती तो शायद श्री राम को वनवास नहीं जाना पड़ता।

हम एक समाज में रहते हैं, हमारे आस पास बहुत से लोग होते हैं, हम अपना जीवन अकेले व्यतीत नहीं कर सकते इसलिए हमें लोगों के साथ रहना पड़ता है, संगति चुननी पड़ती है।

यह हम पर निर्भर करता है कि हम कैसी संगति चुनते हैं, अगर आप अच्छी संगति चुनते हैं तो आप जीवन में आगे बढ़ेंगे, बुरे कामों में नहीं पड़ेंगे किंतु आप अगर बुरी संगति चुन लेते हैं तो आपका जीवन नारायण हेल्प हो जाएगा।

संगति कैसी भी हो उसका असर हमेशा हमारे ऊपर पड़ता जरूर है, इसलिए हमेशा अच्छी संगति में रहना चाहिए। आप सबने सुना तो होगा ही, एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है यही कहावत मनुष्य पर भी लागू होती है।

अच्छी सोच वाले व्यक्ति हमेशा आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे । अच्छे लोग आपको प्रेरित करते हैं, आपको सकारात्मकता से भर देते हैं, और यह आपके आत्मविश्वास को समग्र रूप से बढ़ाते हैं । एक अच्छी संगति कठिन समय में आपका साथ देती है और आपको फलने-फूलने और समृद्ध होने में मदद करती है। दूसरी ओर, एक बुरी संगति आपको दबा देती है और आपको नकारात्मकता का एहसास कराती है।

अच्छी संगति आपके अपनेपन और उद्देश्य की भावना को बढ़ाती है।

अच्छी संगति के लोगों के दिल में वास्तव में आपके सर्वोत्तम हित होते हैं और वे चाहते हैं कि आप अपने लक्ष्यों को पूरा करें। जब आप अपने आप को सकारात्मक प्रभावों से घेर लेते हैं, तो अपने अंतिम लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना बहुत आसान हो जाता है। आप अपने बारे में बेहतर महसूस करते हैं । जब आप इन लोगों के साथ समय बिताते हैं तो आप ऊर्जावान और प्रेरित महसूस करते हैं । यह मेरा स्वयं का अनुभव है, जब हम दीदी जैसी मज़बूत औरा के सानिध्य में होते हैं तो स्वयं को बहुत ही रिलैक्स महसूस करते हैं, ऐसा लगता है कि हम माँ के आँचल में हैं और चारों ओर से सुरक्षित हैं । मन प्रफुल्लित और उत्साहित रहता है और शरीर फुर्ती, चुस्ती से भरपूर रहता है और कार्यशीलता अपने उच्चतम शिखर पर होती है । हम कैसे व्यक्तियों के सानिध्य में हैं, इस बात पर विचार करना

अति आवश्यक है। अच्छी संगति हमारे चरित्र, स्वभाव एवं आचरण को मज़बूत बनाती है ।

यही कारण है कि हमारे बड़े, गुरु जन एवं हमारे हितैषी सदैव हमें अच्छे लोगों के साथ रहने की सलाह देते हैं।जब हमारी संगति अच्छी होती है तब हम सामने वाले से उनके अच्छे गुण ग्रहण करते हैं। महापुरुषों ने मानव को अच्छी एवं बुरी संगति के प्रभाव से परिचित करवाया है ।

हम अच्छे लोगों की संगति यानी सत्संगति करते हैं तो हम जीवन में आगे बढ़ते हैं। सकारात्मक विचार हमारे मस्तिष्क में रहते हैं, हम अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुंच पाते हैं। कहते हैं कि जैसी संगत वैसी रंगत यानी हम यदि संगत अच्छी करेंगे तो हमें अपने जीवन में परिणाम भी अच्छे मिलेंगे और यदि हम बुरी संगत करेंगे तो हमें अपने जीवन में बुरे परिणाम मिलेंगे। यदि हम सत्संगति करते हैं तो वास्तव में हमें बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। संगति का मनुष्य के जीवन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जैसी संगति में रहता है उस पर उसका वैसा ही प्रभाव पड़ता है। एक ही स्वाति की बूंद केले के गर्भ में पढ़कर कपूर बनती है, सीप में पड़ जाती है तो वह मोती बन जाती और यदि साँप के मुंह में पड़ जाती है तो वह विष बन जाती है। इसी प्रकार पारस के छूने से लोहा, सोने में बदल जाता है। फूलों की संगति में रहने से कीड़ा भी देवताओं के मस्तक पर चला जाता है।

ईमानदारों के बीच में चोर भी ईमानदार ही कहलाता है। इसलिए कहा है-

संगति कीजै साधु की, हरे और की व्याधि।
संगति बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि ।।

बुद्धिमान व्यक्ति सदैव सज्जनों के संपर्क में रहते हैं तथा अपने जीवन को भी वैसा ही बनाने की कोशिश करते हैं। उन्हें सत्संगति की पतवार से अपने जीवन रूपी नौका को भवसागर से पार लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। सत्संगति से ही वह ऊंचे से ऊंचे मुकाम पर पहुंच सकता है और समाज में सम्मान भी प्राप्त कर सकता है।

कहते हैं कि व्यक्ति योगियों के साथ योगी और भोगियों के साथ भोगी बन जाता है। व्यक्ति को जीवन के अंतिम क्षणों में गति भी उसकी संगति के अनुसार ही मिलती है। संगति का जीवन में बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। संगति से मनुष्य जहां महान बनता है, वहीं बुरी संगति उसका पतन भी करती है। छत्रपति शिवाजी बहादुर बने। ऐसा इसलिए, क्योंकि उनकी मां ने उन्हें वैसा वातावरण दिया। नेपोलियन जीवन भर बिल्ली से डरते रहे, क्योंकि बचपन में बिल्ली ने उन्हें डरा दिया था। माता-पिता के साथ-साथ बच्चे पर स्कूली शिक्षा का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। कई बार व्यक्ति पढ़ाई-लिखाई करके उच्च पदों पर पहुंच तो जाता है, लेकिन संस्कारों के अभाव में, सही संगति न मिलने के कारण वह हिटलर जैसा तानाशाह बन जाता है। सदाचरण के पालन से चाहे तो व्यक्ति ऐसा बहुत कुछ कर सकता है, जिससे उसका जीवन सार्थक हो जाता है। परंतु सदाचरण का पालन न करने से वह अंतत: खोखला हो जाता है । सत्संगति का, अच्छे विचारों का बीज बच्चे के मन में बचपन में ही बो देना चाहिए। व्यक्ति की अच्छी संगति से उसके स्वयं का परिवार तो अच्छा होता ही है, साथ ही उसका प्रभाव समाज व राष्ट्र पर भी गहरा पड़ता है। अच्छी

संगति व्यक्ति को कुछ नया करते रहने की समय-समय पर प्रेरणा देती है ।

अच्छी संगति व्यक्ति का मन व चित्त निर्मल करती है । उसकी प्रसन्नता बनी रहती है । दिन-प्रतिदिन उसके व्यक्तित्व में निखार आता है । संगति कैसी है, इस बात से व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता चलता है । जीवन का हर कदम मायने रखता है । इसलिए उसे फूंक-फूंककर आगे बढ़ना चाहिए । अक्सर ऐसा देखने में आता है कि कुछ बच्चे स्कूलों में पढ़ाई-लिखाई में बहुत अच्छे होते हैं, सत्संगति से उनमें अटूट विश्वास जगता है और वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं । इसीलिए ऐसे व्यक्तियों के आसपास रहिए जिनका व्यवहार अच्छा हो, ऐसे लोगों की संगति आपके लिए अच्छी साबित होगी।

यदि हम किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की संगति में आते हैं तो उसके शुभ विचार, उसके गुण और उसका स्वभाव हम में आते हैं और हम भी श्रेष्ठ बन जाते हैं। अच्छी संगति का फल हमें सप्तसितारा जीवन की ओर ले जाता है इसलिए हमें अपने दोस्तों का चुनाव करते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए ।

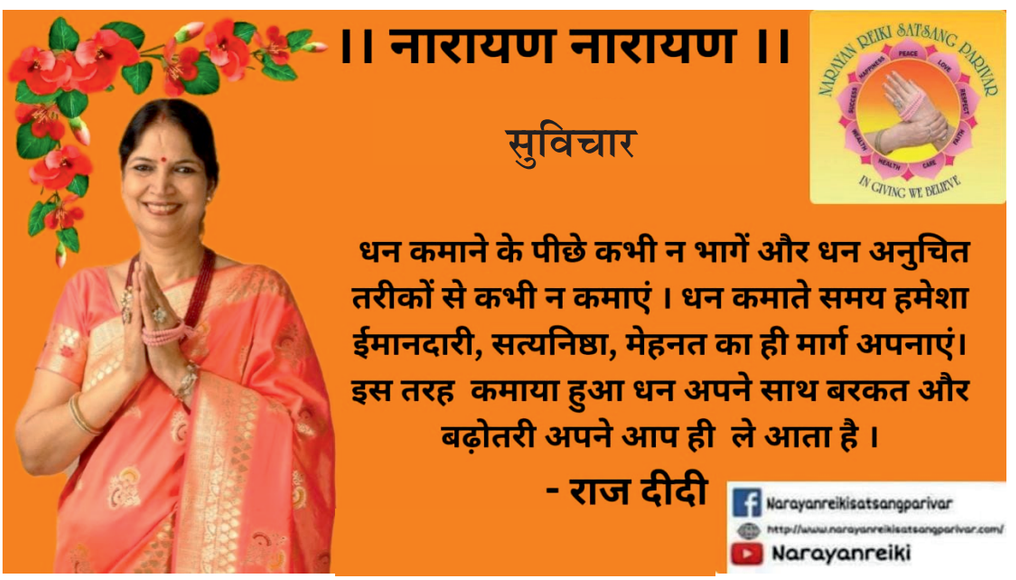

मेघना तपाड़िया को जन्मदिन (२ जुलाई) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत और सफलता से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।

ज्ञान मँजूषा

इस बार के ज्ञान मंजूषा स्तंभ में हम जीवन में सकारात्मक परिवर्तन कर जीवन को सप्तसितारा बनाने के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य लेकर हाज़िर हैं:-

मन में शांति कैसे हो?

इस संदर्भ में दादा जे पी वासवानी के माध्यम से समझाते हुई राज दीदी कहती हैं, हम अक्सर अपसेट हो जाते हैं, निराश हो जाते हैं क्योंकि हमने दूसरों से बहुत अधिक उम्मीदें बांध रखी हैं । जब हमारी इच्छाएं व उम्मीदें दूसरों से पूरी नहीं हो पाती हैं या सामने वाला पूरी नहीं कर पाता तो हम अपसेट हो जाते हैं, निराश हो जाते हैं।

दादा कहते हैं यदि आप इस तरह का जीवन जी रहे हैं कि आप एक नाटक में काम कर रहे हैं और आपको एक रोल अदा करने के लिए दिया गया है, आपको स्टेज पर आना है, आप का रोल अदा करना है और चले जाना है। आप इस तरह का जीवन जीते हैं तो ऐसे में आप निराश या अपसेट नहीं होंगे। आपके मन की शांति असंतुलित नहीं होगी।

इस बात को विस्तार में दादा समझाते हैं कि आपको एक रोल अदा करने को दिया गया है, आप एक रोल अदा कर रहे हैं। आपका साथी कलाकार अपना रोल अदा करने के लिए स्टेज पर आता है और आप पर चीखता है, चिल्लाता है, आपके लिए गलत शब्दों का उच्चारण करता है। ऐसे में आप विचलित होते हैं क्या ? आप विचलित नहीं होते क्योंकि आपको अच्छी तरह से पता होता है कि वह अपना रोल अदा करने के लिए आया हुआ है और मुझे भी अपना रोल सही तरीके से निभाना है । आपको यह अच्छी तरह से पता होता है कि मुझे इस नाटक को सर्वोत्तम तरीक़े से निभाना है और बेस्ट कलाकार का एवार्ड लेना है।

दादा कहते हैं कि आप सब को भी अपना अपना रोल सही तरीके से निभाना होगा। यह आपकी ज़रूरत भी है और यह आपके लिए ज़रूरी भी है।

इस जीवनकाल के दौरान हम अपने कार्मिक अकाउंट को अच्छे कर्मों में कैसे परिवर्तित करें..?

मनुष्य अपने कार्मिक अकाउंट को लेकर ही इस धरती पर जन्म लेता है और कार्मिक अकाउंट लेकर ही इस धरती से विदा होता है।

राज दीदी ने कहा कि हम जो – जो कर्म करते जाते हैं वे हमारे कर्मों की लिस्ट में समाहित होते चले जाते हैं। अच्छे कर्मों की एवज में हम सुख भोगते हैं और जो नकारात्मक कर्म हमने किए हैं उसकी वजह से हम दुःख भोगते हैं। हम सुख तो राजी खुशी भोग लेते हैं, हमें पता ही नहीं चलता कि समय कहां निकल गया। नकारात्मक कर्मों पर हमें फोकस करना चाहिए ताकि हमें और भोगना ना पड़े। हम यदि अधिक जागृत होकर साधना करते हैं तो शास्त्र यही कहता है कि हमारे कर्म अच्छे हैं तो कर्म हल्के तो ज़रूर हो सकते हैं लेकिन आपको भोगना तो पड़ता ही है।

नारायण शास्त्र कहता है कि यदि आप अच्छे कर्म करने के रास्ते पर चल पड़े हैं तो धीरे-धीरे नकारात्मक कर्म यहीं पर खत्म हो जाते हैं, आपको भोगने नहीं पड़ते। इसके लिए हमें क्या करना चाहिए? रोज़ सुबह हम उठते हैं, हमारी आँखें खुली, ईश्वर ने हमें एक और अच्छा दिन दिखाया उसके लिए हमें आभार प्रकट करना चाहिए, 'हे नारायण आपका धन्यवाद।' नारायण ने हमें जो कुछ भी दिया है : अच्छा घर – परिवार, जीवनसाथी, बच्चे और जो भी luxuries दे रखी हैं उनका एक-एक करके धन्यवाद कर सकते हैं तो बेहतर होगा अन्यथा सामूहिक प्रार्थना में धन्यवाद कर सकते हैं। नारायण प्रार्थना प्रतिदिन बोलनी है, उसमें हर चीज़ कवर की गई है। यह सब चीजें हम बैठकर भी कर सकते हैं, लेटे-लेटे भी कर सकते हैं। दिन की शुरुआत हमने आभार प्रकट करके की, फिर नारायण प्रार्थना करनी है, उसके बाद हमारे घर में जितने भी लोग हैं २,४ या अधिक इंक्लूडिंग हेल्पर्स। हमें एक-एक करके उन सभी को विजुलाइज़ कर अपने सामने लाना है और अपने आपसे प्रश्न करना है कि आज मैं ऐसा क्या करूं कि मेरी वजह से इसको सुख मिले, खुशी मिले। कोई डिश बनाकर देनी है, किसी काम में हेल्प करना है, किसी भी तरह का कॉन्ट्रिब्यूशन करना है। अपने तन से या तो दूसरों की सेवा कर दीजिए या दूसरों से सेवा करवा लीजिए। सेवा करने से कर्म हल्के होंगे या तो भोगने से कर्म हल्के होंगे। हम एनआरएसपी हैं और हमने सेवा करना चुना है। 'Charity Begins at Home' हमें सेवा करके अपने कर्म हल्के करने हैं। आपको यह डिसाइड कर लेना है कि किस–किस के लिए मुझे क्या-क्या करना है। आपकी फोन पर किसी से बात होती है, उसने आपसे कहा कि उसको किसी बात की प्रॉब्लम है तो आपको तुरंत तैयार हो जाना है कि इस पर्सन के लिए मुझे प्रार्थना करनी है। ज़रूरी नहीं है आप उसे बताएं, आप मन ही मन प्रार्थना कर सकते हैं क्योंकि हमें उनके लिए प्रार्थना करने का मौका मिला है, अपने कर्मों को हल्का करने के लिए। जब भी आपको कोई भी नेगेटिव समाचार सुनाई दे तो यह समाचार आपके कर्मों को हल्का करने के लिए आप तक पहुंचा है ताकि उसे तो सुख मिले और मेरा कर्म भी हल्का हो । आपको यह अवेयरनेस होनी चाहिए कि मेरी वाणी या व्यवहार या बॉडी लैंग्वेज के माध्यम से किसी को हर्ट ना हो । आप किसी को हर्ट कर देते हैं तो सामने वाले के नकारात्मक कर्म आपके अकाउंट में आ जाते हैं और आपके अच्छे कर्म उसके अकाउंट में चले जाते हैं। सामने वाला अगर हमको हर्ट करता है तो निश्चित है कि हमारे कर्म हल्के हुए हैं ।

यदि आपने किसी को कोई नकारात्मकता दी तो उससे बाहर निकलने के लिए साधना:

जिस भी किसी व्यक्ति के व्यवहार में हमारे व्यवहार के कारण कोई नेगेटिविटी आ गई है उनके व्यवहार पॉजिटिव करने के लिए आपको साधना करनी होगी। सोने के ठीक पहले ५ मिनट, १० मिनट, १५ मिनट जितनी देर भी आप कर सकते हैं, करिए।

कमर सीधी करके, आँखें बंद करके शांति से बैठेंगे। कमर धीरे-धीरे झुक जाएगी तो चलेगा। तीन बार आप गहरी सांस लेंगे। हमें उस व्यक्ति को अपने सामने विजुअलाइज़ करना है जिसके साथ हमने ग़लत व्यवहार किया,

जिसके कारण उसकी आज यह अवस्था है। हमें अगर ऐसा लगे कि उस व्यक्ति के साथ हमारे क्रोध को किसी और ने भी झेला होगा तो साथ ही साथ हमें उन सभी को भी विजुअलाइज़ करना होगा कि वह हमारे इर्द-गिर्द हैं जिन्होंने आपके क्रोध को झेला। हमसे गलती हुई है और माफी मांगनी है। 'हे नारायण आई एम सॉरी, मुझसे गलती हो गई, मुझे माफ कर दीजिए।'

आपने जैसे ही सॉरी शब्द कहा – ब्रह्मांड माफ करने के लिए तुरंत आतुर होता है। यह प्रकृति की, ब्रह्मांड की खासियत है। इमीडिएट वह आपसे कहता है कि मैंने माफ़ कर दिया । उसके एवज में हमें सामने वाले से कहना है – थैंक यू वेरी मच, आई लव यू, आई लाइक यू, आई रिस्पेक्ट यू, नारायण ब्लेस यू विथ लव, रिस्पेक्ट, फेथ, केयर। जो चीजें हमने उस वक्त नहीं दी थी, अब हम वह आशीर्वाद के माध्यम से दे रहे हैं । यह आपका दो तरफ़ा काम कर देता है, एक पंथ दो काज। ब्रह्मांड में आपने अच्छी बातें भेज दी, आपको माफ़ी मिल गई और साथ ही साथ आपका मेडिटेशन भी हो गया। इसके बाद आप सो सकते हैं, पर यह करना सोने के तुरंत पहले है और शांति से करना है ।

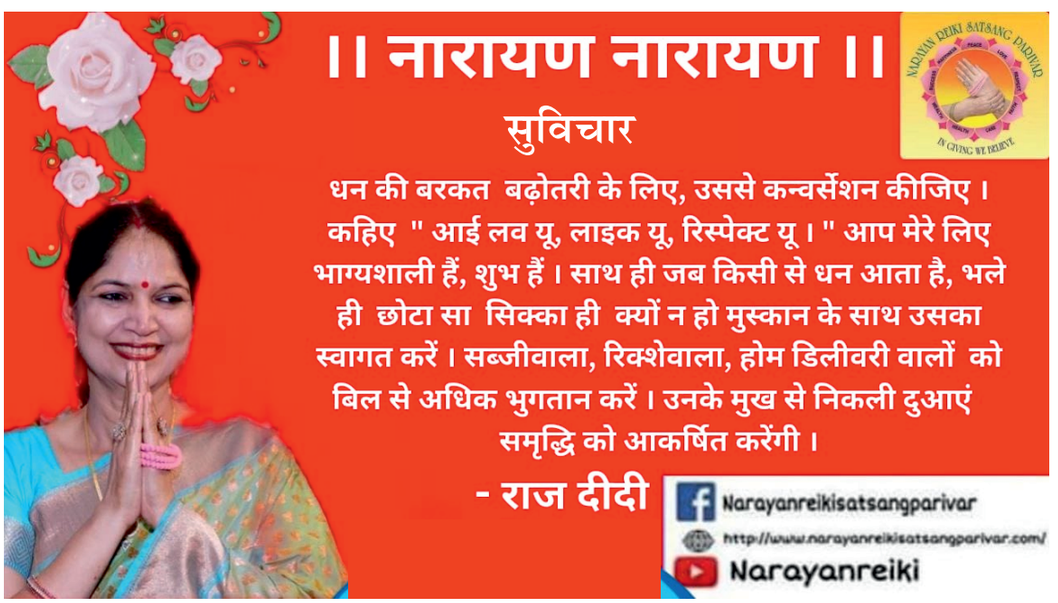

युवा मंच

प्रभाव का तात्पर्य - किसी व्यक्ति या वस्तु को बदलने या प्रभावित करने की शक्ति से है - विशेष रूप से जब परिवर्तनों को लाने के लिए सीधे मजबूर किए बिना परिवर्तन करने की शक्ति।

प्रभाव न केवल जन्म के बाद शुरू होते हैं बल्कि बच्चे के गर्भ में आने से ही अपना असर दिखाते हैं। यही कारण है कि गर्भवती माताओं को शांत, खुश और सकारात्मक रहने की आवश्यकता होती है। यहां तक कि माँ के खान-पान का भी बच्चे के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में सबसे पहला प्रभाव पड़ता है उसके माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी व उसके साथ रहने वाले लोगों का। हालाँकि एक शिशु बोल नहीं सकता लेकिन जो भी वह देखता सुनता है वह उसके व्यक्तित्व को तराशता है। व्यापारिक परिवार में जन्म लेने वाला बच्चा अनायास ही व्यापार के गुर सीख लेता है, पुजारी का बच्चा पढ़ना-लिखना सीखने से पहले ही मंत्रों का जाप करने में सक्षम हो जाता है, इत्यादि। यहां तक कि जीवन और लोगों के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण, स्थितियों को संभालने का तरीका बचपन से होने वाले प्रभाव का परिणाम है।

व्यक्ति की संगति उस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है । प्रसिद्ध कहावत है कि - एक आदमी उसकी संगति से जाना जाता है और बुद्धिमानों की संगति आपको बुद्धिमान बनाती है या फिर उल्टा । सबसे बड़े उदाहरण हैं - अर्जुन, वे कृष्ण की संगत में थे और दुर्योधन के साथ थे शकुनि।

कुछ स्थितियों में आपके पास अगर चॉइस न हो तो चावल के दाने के सिद्धांत को हमेशा याद रखें। जब अनाज को कूटा जाता है तो भूसी उड़ जाती है और अनाज हम रख लेते हैं। इसी प्रकार अपने साथ जुड़े लोगों के गलत गुणों को नज़रंदाज़ करें और उनके अच्छे गुणों पर ध्यान दें।

अब तक हम उन प्रभावों के बारे में बात करते रहे हैं जिनसे हम प्रभावित होते हैं लेकिन क्यों न हम खुद को ऐसा आकार दें कि हम पृथ्वी को एक बेहतर जगह बनाने के लिए खुद एक प्रभाव बन जाएं। राज दीदी भी यही कहती हैं और यही समय की पुकार भी है। उठो, जागो, जागरुक बनो और दूसरों को उठने में मदद करो।

एक बार जब हम सद्गुणी बन जाते हैं तो हमारी आभा दूसरों को प्रभावित करने लगती है और धीरे-धीरे सतयुग की ओर परिवर्तन सहज हो जाता है। आइए हम अपना सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनें, प्रत्येक जीवित प्राणी को अपना सर्वश्रेष्ठ दें और इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का माध्यम बनें।

नम्रता राठी को जन्मदिन (२३ जुलाई) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत और सफलता से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद

बच्चों की फुलवारी

आज हम जो कुछ भी हैं, हमारे संस्कार, हमारी आदतें, हमारा चरित्र भी हमारे आसपास के लोगों का ही प्रभाव है। ऐसा कहा जाता है कि बुद्धिमानों की संगति व्यक्ति को बुद्धिमान बनाती है। हाल ही में एक रेडियंट स्टार, जो एक चार्टर्ड अकाउंटेंट है, के एक प्रश्न से मुझे पता चला कि अच्छे प्रभाव भी कैसे काम करते हैं। उनका सवाल था, 'क्या किसी ट्रस्ट को दिए गए दान पर आयकर का दावा करना उचित है? क्या हम कर्म संचय करते हैं?' यह एक आँखें खोल देने वाला सवाल था कि युवा इतने जागरूक हैं। इस बार टीम सतयुग द्वारा सुझाया गया विषय - प्रभाव इतना उपयुक्त लगा, क्योंकि यही वह समय है जब बच्चे घर से बाहर निकलकर अपने चुने हुए क्षेत्रों में अपना करियर बनाते हैं।

जब तक हम घर पर होते हैं तब तक हमारे माता-पिता, हमारे शिक्षक, हमारे पड़ोसी, दोस्त, घर पर मददगार हम पर लगातार नज़र रखते हैं। समय-समय पर मार्गदर्शन दिया जाता है कि किससे दोस्ती रखनी है और किससे नहीं।

एक कहावत है कि एक सड़ा हुआ सेब पूरी टोकरी को खराब कर सकता है। ठीक उसी तर्ज़ पर जैसा कि दीदी कहती हैं - एक अच्छा समर्पित सत्संगी पूरे परिवार का उत्थान कर सकता है।

इसलिए हमें वह अच्छा इंसान बनने की ज़रूरत है, जिसके संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व, चरित्र, आदतें उन्नत हो जाएं।

महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन का और शकुनि ने दुर्योधन का मार्गदर्शन किया था। नतीजा हम सब जानते हैं।

कर्ण को दानवीर कर्ण के नाम से भी जाना जाता है जो अपनी वीरता, अपनी विशाल हृदयता, अपनी असाधारण योद्धा क्षमताओं के लिए जाने जाते थे। लेकिन उन्होंने दुर्योधन को अपना मित्र चुना। वह अपने अधर्मी धर्म पर कायम रहा, इसलिए नष्ट हो गया।

हमें अपने प्रभावों का चयन करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए।

आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का बच्चों पर प्रभाव बहस का विषय है। लेकिन हमें यह विचार करने की आवश्यकता है कि यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ही है जो विशाल जानकारी का स्रोत है। जानकारी पूर्व इतिहास से लेकर वर्तमान तक की है। बच्चे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से सीखते हैं जो हमारी परिवर्तनशील संस्कृति, हमारे महान वास्तुशिल्प मंदिरों के निर्माण कौशल, हमारे संस्कारों के बारे में एक सकारात्मक अंतर्दृष्टि देता है जिसने हमें हमेशा मज़बूत रखा है।

तो जैसे राज दीदी कहती हैं कि सर्वोत्तम को आत्मसात करो और बाकी को छोड़ दो। हमें लोगों, मीडिया, आसपास से अच्छे प्रभाव लेने की ज़रूरत है और बाकी नारायण पर छोड़ देना चाहिए।

राज दीदी हमेशा साझा करती हैं कि कैसे अच्छे, सकारात्मक साहित्य के कारण वह आज लोगों को सही रास्ता अपनाने के लिए प्रेरित करने में महान ऊंचाइयों पर पहुंच गई हैं।

तो जैसा कि हमेशा कहा जाता है कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। सकारात्मक और नकारात्मक। हमें जागरुक रहना होगा और हमेशा अच्छे प्रभाव अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बनाना होगा।

दीदी के छाँव तले हमारी पत्रिका का एक ऐसा स्तंभ है जिसमें हम उन अनुभवों को साझा करते हैं जहां सत्संगियों ने दीदी के शब्दों को जीवन में उतारा और जीवन को सप्त सितारा बनाया । ऑन लाइन सत्संग ऐसी ही शेयरिंग से भरा हुआ रहता है । प्रस्तुत हैं ऐसे ही कुछ अनुभव:-

सविता गुप्ता

दीदी मैंने पहले भी शेयर किया था कि बैंक में ३९ साल से ईमानदारी से काम करते हुए भी इंक्रीमेंट नहीं मिला, लोन सैंक्शन के किसी मामले को ले कर, मेरा इंक्रिमेंट नहीं लगा। शेयरिंग सुन कर, माथा टेकने के दौरान अपनी गलतियों का एहसास हुआ। ड्राइवर, हेल्पर के छुट्टी लेने पर उनकी सैलरी काट लेती थी, ग्रुप में जब कभी बाहर जाते तो मैं खर्चा करने से बचती थी और सोचती थी कि कोई और पैसा दे दे।

दीदी कहते हैं कि जब आप दूसरों के हक़ का रख लेते हैं तब प्रकृति भी आपके हक़ का रख लेती है।

रोहन गुप्ता रेडिएंट स्टार जैकपॉट शेयरिंग्स

दीदी आज मुझे नारायण भवन से जुड़े हुए पूरा एक साल हो गया है और इस एक साल में मैंने आपसे जो कुछ सीखा, यहां शेयर करने जा रहा हूं।

१. आपने कहा था कि समारोहों में पानी की छोटी बॉटल के पानी को पूरा खत्म करना चाहिए, जल की बचत होती है। मैंने ऐसा ही किया, परिणाम यह है कि अब मैं सुबह उठ कर खाली पेट पर्याप्त जल पी पाता हूं, जो मैं पहले नहीं कर पाता था।

२. आपके कहे अनुसार मैंने अपनी थाली में उतना ही भोजन लेना शुरु कर दिया जितना मैं खत्म कर सकूं। एक दाना भी झूठा नहीं छोड़ता हूं। परिणाम स्वरूप मेरी एसिडिटी की समस्या में ९९३ सुधार है।

३. जब भी भोजन ग्रहण करता हूं, आभार के भाव के साथ, नारायण का प्रसाद मान कर, सही ऊर्जा भर कर ही खाता हूं। परिणाम स्वरूप मेरा वजन बिल्कुल नियंत्रण में है।

४. पहले ऐसा होता था कि मेरे नियर डियर में कुछ लोग मुझे देख कर मेरा मज़ाक उड़ाते थे, तब मैं भी व्यथित हो कर तेज़ आवाज़ में उन्हें सुना देता था। आपसे वाणी का सदुपयोग और विनम्रता सीखी, तब से उनके लिए मेरे मुख से प्रार्थना ही निकलती हैं।

५. पहले मुझे जन्म दिन मनाना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। आपने सिखाया कि नारायण का धन्यवाद करें कि हमें अति दुर्लभ मनुष्य योनि मिली है, माता पिता का आभार मानें। इस बार मैंने १०० से भी ज़्यादा गाय, २०० से ज्यादा कुत्तों की सेवा करके अपने जन्म दिन को यादगार मनाया।

६. एक साल पहले मैं आपसे किसी विशेष कारण से जुड़ा था, तब मैं दोषारोपण बहुत करता था। एलआरएफसी से भरे देवदूत भेजना आपने सिखाया।

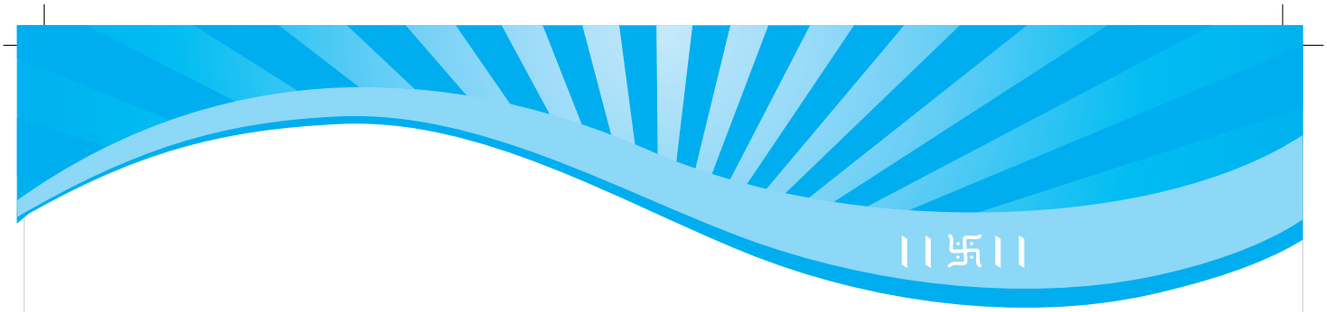

७. मेरा जब कार्य सिद्ध हो गया तब मैंने ब्रह्ममुहूर्त की प्रार्थनाओं में जुड़ना बंद कर दिया था। फिर मैं चाह कर भी ब्रह्ममुहूर्त की प्रार्थना में उठ नहीं पा रहा था। कुछ दिन पहले मैंने नारायण भवन में आ कर मेरी मां से क्षमा मांगी थी कि मेरे मुख से नारायण शब्द निकल जाते थे। परिणाम यह है कि अब मेरी स्वतः ही ४ बजे नींद खुल जाती है।

८. मैं नारायण प्रार्थना सुबह उठते ही और सोने से पहले दोहराता रहता हूं। परिणाम यह है कि चलते फिरते मेरे मुख से सकारात्मक शब्द ही निकलते हैं।

९. सबसे बड़ा जैकपॉट यह है कि मेरे अंदर असीम आत्म–संयम आ गया है–हर भाव में, चाहे वह विचार, वाणी, व्यवहार में हो, चरित्र में हो या ईमानदारी, वफ़ादारी में।

१०. आपने सिखाया कि जो हम करते हैं, वही हमारे पास लौट कर आता है। कुछ दिन पहले परिवार में कुछ नारायण हेल्प सिचुएशन हुई, जो कि कई साल पहले मेरे पापा के साथ हुई थी पर मैं छोटा था कुछ नहीं कर पाया था। आज वही स्तिथि परिवार में किसी के साथ हुई, अगर आपसे जुड़ा नहीं होता तो सोचता भगवान सही कर रहा है उनके साथ,परंतु उस दिन मैंने उनके लिए निरंतर प्रार्थना की और शांति भरे देवदूत भेजे, चाहे उन्होंने हमारे साथ बुरा किया था।

११. आप जैसा कहते हैं कि अदभुत्, अलौकिक शक्तियों से भरे नारायण भवन में स्वागत है, यह सच में चमत्कारी भवन है। जो भी मैं यहां प्रार्थना करता हूं, मेरे सारे काम फलीभूत होते जा रहे हैं।

१२. जीवन में अच्छा इंसान ज़रूर बनूंगा, आपकी छत्र छाया में जो आ गया हूं।

१३. आप चार्टर्ड अकाउंटेंट बनना चाहते थे दीदी, नारायण ने आपको हमारे जीवन का ऑडिटर बना दिया है, आपने हमें हमारे जीवन को कैसे ऑडिट करना है, बता दिया है। ऐसे ही आप हमारे सीए बने रहिए।

१४. जब दूसरों के कन्फेशन सुनें नारायण भवन में दूसरों के कन्फेशन और उनके द्वारा की गई गलतियों के परिणाम सुनते हैं तब, उनके लिए प्रार्थना करें साथ ही साथ सीख लेते हुए प्रण लें कि हम सही मार्ग पर ही चलेंगे।

अनामिका

दीदी मैं बचपन से ही इतनी गलतियां करती आई हूं, उसका मुझे तो एहसास भी नहीं था, यदि आप मुझे नहीं मिले होते तो मैं आज भी गलतियां कर रही होती और ब्रह्मांड में भेजे अपने कटु शब्दों के कुपरिणाम भुगत रही होती। पढ़ाई में होशियार थी इसका मुझे बहुत घमंड हो गया था, मैं स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझने लगी। घर में भाईयो से और माता पिता से दुर्व्यवहार करती थी। शादी के बाद, पति और ससुराल वालों को अपने से कम आँकती थी। नतीजा यह है कि मैं तन, मन, धन, संबंध हर तरह से अस्वस्थ हो गई थी। आपसे जुड़ कर जाना कि मैं स्वयं ही इस सबके लिए ज़िम्मेदार हूं। अब सुधार कर रही हूं।

जैसा संग वैसा रंग

एक राजा एक बार कुछ सैनिकों को लेकर जंगल में शिकार करने के लिए गया। चलते गए, चलते गए जंगल में कोई शिकार तो नहीं मिला, पर घनघोर जंगल में प्रवेश कर लिया।

थक कर एक जगह पर रुक कर तनिक विश्राम करने की सोची, पर पास ही डाकुओं का ठिकाना था। वहां पर एक पेड़ था। उस पेड़ के ऊपर एक तोता बैठा था। तोते ने राजा और सैनिकों को देख कर बोलना चालू किया- 'पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो राजा आए हैं।' इनके पास बहुत धन और क़ीमती आभूषण होगा। जल्दी आओ, जल्दी आओ, यह सुनकर डाकू लोग बाहर आए। राजा और सैनिकों ने डाकुओं को देखा, तो जान बचा कर भागने लगे। काफ़ी दूर डाकुओं से बचकर भाग चले। थक कर वे एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां एक पेड़ था। वहां थोड़ा सांस लेने के लिए खड़े हुए। उसी पेड़ के ऊपर एक और तोता था। उस तोते ने भी इनको देख कर बोलना शुरू किया, हे राजन! आपका हमारे साधु महाराज के कुटिया में स्वागत है। आइए पानी पीजिए, विश्राम कीजिए, राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ।

एक जाति के दोनों प्राणी और दोनों के व्यवहार में इतना अंतर? राजा कुटिया में गए और साधु को मिले और साधु को आपबीती सुनाई। राजा ने साधु से पूछा कि इन दोनों तोतों के व्यवहार में इतना अंतर क्यों?

साधु ने बड़ी धैर्यता के साथ कहानी सुनाते हुए कहा कि- हे राजन! ऐसी कोई बड़ी बात नहीं। यह संगत का असर है। जैसा वातावरण मिलता है, जैसा संग मिलता है, वैसा ही व्यक्ति सीखता है, उस तोते को डाकुओं का संग मिला, वातावरण मिला, तो उसकी भाषा भी डाकुओं जैसी बन गई। अर्थात् जो जिस वातावरण में रहता है वैसा ही बन जाता है और यहाँ के तोते को मेरा साथ मिला इसलिए मेरी तरह आदर भाव से बोलता है।

इस कहानी से हमें यह बोध मिलता है कि हम जीवन में कभी भी किसी का भी संग करें तो बहुत सोच समझकर करें, जिससे हमारा कभी नुकसान ना हो। कहते हैं ना 'जैसा संग वैसा रंग।'

केदार राठी को जन्मदिन (२९ जुलाई) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत और सफलता से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।

संगति का फल

एक गांव में किसी आदमी के पास बहुत-सी गायें थी । वह गायों का दूध बेच कर अपना गुज़ारा करता था । एक बार उनके गांव में कोई महात्मा आए और वहां यज्ञ करने लगे । महात्मा वृक्षों के पत्तों पर श्री कृष्ण-श्री कृष्ण लिखते थे।

वह व्यक्ति रोज़ अपनी गायों को वहां चराने ले जाता था । एक दिन एक गाय ने श्री कृष्ण नाम लिखा पत्ता खा लिया । शाम को जब सभी गायें वापस अपने बाड़े में चली गईं तब वह गाय 'श्री कृष्ण, श्री कृष्ण' बोलने लगी।

तभी सारी गायें उससे बोली, 'ये तुम क्या बोल रही हो, तो वह बोली, श्री कृष्ण नाम रूपी पत्ता मैंने खा लिया है, ऐसा लगता है यह नाम मेरे अंदर समा गया है और मेरा अहंकार चला गया है ।'

ऐसा कहकर वह गाय 'श्री कृष्ण श्री कृष्ण' नाम जपती रही। सभी गायों ने निर्णय लिया कि इसे अपनी टोली से बाहर कर देते हैं । सुबह जब व्यक्ति आया तो उसने देखा कि वह गाय बाड़े के बाहर खड़ी है, तो वह उसे वापस बाड़े के अंदर करता है परंतु बाकी की गायें उसे सींघ मार कर वापस बाड़े के बाहर कर देती हैं । उस व्यक्ति को कुछ समझ नहीं आता है कि सभी गायें इसे दूर क्यों कर रही हैं, इसको कोई बीमारी तो नहीं हो गई ।

कहीं ऐसा ना हो कि एक गाय के चक्कर में मेरी सभी गायें भी बीमार हो जाएं । वह व्यक्ति रात को उस गाय को जंगल में छोड़ आता है । जंगल में एक चोर को वह गाय मिलती है । वह उसे दूर गांव में ले जाकर किसी किसान को बेच देता है । वह किसान भी देखता है कि यह गाय सारा दिन श्री कृष्ण श्री कृष्ण जपती रहती है ।

अब किसान उस गाय का दूध बेच कर अपना गुज़ारा करने लगा । श्री कृष्ण नाम के प्रभाव से उस गाय का दूध अमृत समान हो गया । दूर–दूर से लोग उस गाय का दूध लेने आने लगे और उस किसान के घर के हालात सुधरने लगे।

एक दिन राजा के मंत्री वहां से गुज़र रहे थे, तभी वह किसान के घर रुके तो किसान ने उन्हें उस गाय का दूध पिलाया, वो दूध पीकर मंत्री किसान से बोले हमने ऐसा दूध कभी नहीं पिया।

किसान बोला यह तो इस गाय का दूध है जो सारा दिन श्री कृष्ण श्री कृष्ण करती रहती है।

श्री कृष्ण नाम का जाप करती उस गाय को देखकर मंत्री हैरान रह जाते हैं और वापस महल को लौट जाते हैं।

उन दिनों उस नगर की रानी बीमार थी, कई वैद्यों के उपचार के बाद भी जब वह ठीक नहीं हुई तो राजगुरु बोले कि रानी को तो भगवान ही बचा सकते हैं। तभी मंत्री ने राजा को उस गाय के बारे में बताया । राजा को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ, वे मंत्री के साथ किसान के पास पहुंचे और उस गाय को देखकर हैरान रह गए। राजा, किसान से बोले यह गाय मुझे दे दो।

किसान हाथ जोड़कर राजा से बोला, 'महाराज, इस गाय के कारण मेरे घर के हालात ठीक हुए हैं, मैं यह गाय यदि आप दे दूंगा तो मैं फिर से भूखा मरने लगूंगा। राजा बोला, मैं आपको इस गाय के बदले इतना धन दूंगा कि आप की गरीबी दूर हो जाएगी।

तब किसान ने खुशी-खुशी गाय को राजा को दे दिया। अब वह गाय महल में रानी के पास रहती है और श्री कृष्ण नाम का जाप करती रहती। श्री कृष्ण नाम के जाप को सुनने से और उस गाय के अमृत रूपी दूध को पीने से रानी की सेहत सुधरने लगी और धीरे-धीरे वह ठीक हो गई।

अब गाय राज महल में राजा के साथ रहने लगी। उस गाय की संगत में सारा गांव श्री कृष्ण नाम का जाप करने लगा। पूरे महल में और पूरे नगर में श्री कृष्ण नाम का जाप गूंजने लगा। श्री कृष्ण नाम के प्रभाव से एक पशु भी राज महल के सुखों को भोगने लगी। इसी तरह श्री कृष्ण नाम के जाप से मनुष्य भी भवसागर से पार हो सकता है।

शिक्षा : गाय ने श्री कृष्ण की शरण चुनी, गाय की संगति में जितने भी लोग आए उन सब का जीवन सुधर गया। इसलिए ऐसे संगति चुनिए जिससे आप जीवन में आगे बढ़ें और ऐसे व्यक्ति बनें जिसकी संगत में सब रहना चाहें, आप की संगत का असर दूसरों पर अच्छा प्रभाव डाले।

राम और श्याम

राम और श्याम दो भाई थे, दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ा करते थे और यहां तक कि एक ही कक्षा में। किंतु राम पढ़ने में होनहार था। वहीं उसका भाई श्याम पढ़ने से बचता था और ना पढ़ने के ढेरों बहाने ढूंढता था। राम के दोस्त पढ़ने वाले थे और श्याम के दोस्त ना पढ़ने वाले और कामचोरी करने वाले थे।

राम अपने भाई श्याम को उन दोस्तों से बचने के लिए कहा करता, मगर श्याम उसे डांट लगा देता और कहता अपने काम से काम रखा करो। श्याम के दोस्त घर से स्कूल जाने के लिए निकलते और रास्ते में कहीं और चले जाते। कभी पार्क में बैठते, कभी जाकर कहीं खाना-पीना करते, और कभी फिल्म देखा करते थे। श्याम भी उनकी संगति में आ गया और वह भी धीरे-धीरे स्कूल जाने से बचता रहता। श्याम भी उन दोस्तों के साथ बाहर खाना-पीना और घूमना करता। राम उसके इस प्रकार की धोखाधड़ी से बहुत चिंतित था। श्याम से परीक्षा में फेल होने की बात भी कही मगर श्याम ने नहीं माना। एक दिन की बात है श्याम स्कूल जा रहा था, उसके दोस्त मिल गए और उन्होंने कहा आज स्कूल नहीं जाना है। हम सभी अपने दोस्त हरि का जन्म दिवस मनाएंगे और बाहर खाना-पीना

करेंगे और खूब मज़े करेंगे। पहले तो श्याम ने मना किया किंतु दोस्तों के बार-बार बोलने पर वह उनके साथ चला गया। श्याम और उसके मित्रों ने खूब पार्टी की और उस दिन स्कूल नहीं गए। इस प्रकार का काम वह और उसके दोस्त निरंतर करते रहते।

परीक्षा हुई जिसमें श्याम और उसके दोस्त सफल नहीं हो पाए, वे सभी फेल हो गए। राम ने हर बार की तरह प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्याम अपने घर मार्कशीट लेकर गया जिसे देख माता-पिता बहुत उदास हुए। उन्हें दुःख हुआ कि हमारा एक बेटा पढ़ने में इतना अच्छा है और दूसरा इतना नालायक। श्याम किसी भी विषय में पास नहीं हो पाया। श्याम के माता-पिता बहुत व्यथित हुए। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा मगर अंदर ही अंदर वह बहुत दुःखी होते रहे।

उन्होंने सोचा कि अब हम दूसरे लोगों को क्या बताएंगे कि हमारा बेटा एक भी विषय में पास नहीं हो पाया। इस प्रकार माँ-पिताजी को श्याम ने बहुत चिंतित वह दुःखी देखा जिस पर उसे भी दुःख हुआ। श्याम ने अपने मां-बाप को भरोसा दिलाया कि अगली परीक्षा वह सफल होकर दिखायेगा। श्याम ने अपने उन सब दोस्तों को छोड़ दिया जिन्होंने उसकी सफलता में उसका मार्ग रोका था। उन सभी छल और कपट करने वाले दोस्तों को छोड़कर अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाया।

नतीजा यह हुआ कि साल भर की मेहनत से वह परीक्षा में ना सिर्फ़ सफल हुआ अपितु विद्यालय में भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। इस पर उसके माता-पिता को बहुत खुशी हुई और उन्होंने अपने पुत्र श्याम को गले से लगाया, उसे शाबाशी दी।

श्याम को पता चल गया था कि जैसी संगति मिलेगी वैसा ही परिणाम मिलेगा।

नैतिक शिक्षा-जैसी संगति में रहते हैं उससे वैसा ही गुण आता है। अर्थात् अच्छी संगति में रहना चाहिए।

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

|| Narayan Narayan ||

In childhood, our father always advised us to make friends having good habits. He asked us to associate with such friends from whom we could learn something good. Your future depends on the people you meet, befriend, and live in the present. Bauji used to take special care of what kind of magazines and story books we read. There was a ban on the entry of film magazines and literature which could cause bad effect on the children of the house. Bauji always asked us to make such friends from whom we could learn something, or they learnt something good from us. There was always a very virtuous and religious atmosphere in the house. We grew up with the chants of Ram-Ram and this tune became our life. The name of Ram became an integral part of our breath and now without any effort the name of Ram automatically comes out with every breath even during sleep. Because of the good company in childhood, the importance of family and the importance of relationships was understood. It also helped in realizing that life is meaningful only when it is lived for the good and benefit of others along with us. The feeling of giving the best is the result of keeping good company. Bauji always used to recite a couplet of Kabir Das to us,

संगत कीजे साधु की कभी न निष्फल होय ।
लोहा पारस पारस ते, सो भी कंचन होय ।।

That is, company of saints never fails, just as iron turns into gold by the touch of a philosopher's stone, in the same way, by listening carefully to the words of saints and following them, a man becomes a gentleman.

We all sisters and brothers followed this lesson of Bauji throughout our life and today we are living a contented life.

Rest all Good

R. Modi

CO-EDITOR

Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office

Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9327784837
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	RADHIKA AGRAWAL	9326811588
GOHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MALEGAON	AARTI DI	9518995867
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAYPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
UBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

|| 卐 ||

Editorial

Dear Readers,

|| Narayan Narayan ||

Recently, I happened to meet a very old friend. It took a moment to recognize her. Her usual gloomy look was replaced by an intense glow on her face. The pride in her body language was replaced by gentleness and humility. The lovable and enthusiastic way she met and the changes in her made me enquire "Hey, you have completely changed".

As soon as I said this, she replied that it is the effect of the company. Nowadays I am associated with a Satsang. After listening to that Satsang, the change spontaneously happened to me.

To be honest, myself and everyone associated with me is happy due to these changes that have come within me.

After catching up on a lot of topics, we said goodbye to each other. I thanked her as she gave me a new topic for Satyug magazine – **Influences.**

Yes friends, this time this edition is about how company affects our lives.

May you all live in good company and live a seven-star life with these best wishes,

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

You Tube

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Association or company means being together. The people with whom we live is called our company. Association has a great and important effect on a person's character.

It is a virtuous company that has an ability to convert your demerits into virtues. Good qualities are imbibed in a person through good company, but on the other hand, if the company is not good, then even the good qualities of a person can be undone. It was because of Chanakya's association, that Chandragupta Maurya became such a great emperor. If the Kauravas would have not been influenced by the company of maternal uncle Shakuni, Mahabharata might have not happened and if Kaikai had not listened to Manthara, then maybe Shri Ram would not have gone to exile.

We live in a society and are surrounded by many people. We cannot spend our life alone, so we must live with people and choose our company.

It depends on us that what kind of company we choose. If you choose good company, then you will progress in life and you will not indulge in bad deeds but if you choose bad company then you have to go through a Narayan help situation in your life.

No matter what the company is, it always affects us, that is why we should always be in good company. You all must have heard that one fish pollutes the whole pond, the same saying applies to humans as well.

People with good thought process will inspire you to move forward. Good people inspire you, fill you with positivity, and it helps in boosting your confidence. A good company stands by you through tough times and helps you flourish and prosper. On the other hand, a bad company pulls you down and makes you feel negative.

Good company enhances your sense of belonging and purpose. People in good company genuinely have best interests at heart and want you to accomplish your goals. When you surround yourself with positive influences, it becomes so much easier to focus on your end goals. You feel better about yourself when you spend time with these people, you feel energized and inspired. This is my own experience, **when we are in the company of a strong aura like Didi, we feel very relaxed, it seems that we are in mother's lap and safe from all sides.** The mind remains cheerful and excited, and the body is full of agility. Enthusiasm and functionality are at it's highest peak. It is very important to give a thought about the kind of people we keep company with. Good company strengthens our character, nature, and

conduct.

This is the reason why our elders, gurus and our well-wishers always advise us to be with good people. When we have good company then we imbibe their good qualities. Great men have given insights on the effects of good and bad company.

If we keep the company of good people i.e**., satsangati**, then we move forward in life. Positive thoughts ponder in our mind, and we can reach our goal easily. It is said that if we keep good company then we will get good outcome in our life and if we keep bad company then we will get bad outcome in our life. If we do satsangati then we get to see very good results for sure. Association of good has a favorable effect on human life. The type of company a man keeps, shows impact on him.

A single drop of Swati becomes camphor after reaching in the womb of a banana, if it falls into an oyster, it becomes a pearl and if it falls into the mouth of a snake, it becomes poison. Similarly, iron turns into gold when touched by Paras. By being in the company of flowers, even a worm sits on the head of the deities.

Amidst honest people, even a thief is called honest. That's why it is Said:-

संगति कीजै साधु की, हरे और की व्याधि।
संगति बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि?

The company of the sage banishes all malady.
The company of bad, brings in all ailments.

Intelligent people always keep in touch with gentlemen and try to make their life like theirs. They should steer the boat of their life across the ocean with the rudder of satsangati. One can reach the highest position only by having good company and can also get respect in the society.

It is said that a person becomes a Yogi with Yogis and a Bhogi with Bhogis. A person gets next birth according to the association he keeps in the last moments of life. **Company has a deep impact in life**. A man becomes great by company and on the other hand, bad company can cause a person's downfall. Chhatrapati Shivaji became valiant because his mother gave him that kind of environment. Napoleon was afraid of cats for his entire life, as he was frightened of them as a child.

Schooling has a deep impact on the parents as well as the child. At times, a person reaches high positions by gaining education, but due to lack of values and not getting the right company, he becomes a dictator like Hitler. By following good conduct, and if a person wishes, he can do many such things, which can make his life meaningful. But when we do not follow good conduct, life eventually becomes

hollow. The seed of good company, good thoughts should be sown in the child's mind from childhood itself. With a good company, not only a person but his own family too becomes good, as well as it has a deep impact on the society and the nation. Good company inspires a person to keep doing something new from time to time.

Good company purifies a persons mind and heart. Happiness too remains intact, and personality improves day by day. **The personality of a person is known by the company he keeps.** Every step of life matters. That's why, one should take every step carefully. It is often seen that some children are very good in studies at school, good company instills unwavering faith in them, and they can achieve their goal, so be around such people who have good behavior, the company of such people will prove fruitful to you.

If we come in the company of an excellent person, then his good thoughts, his qualities and his nature get absorbed in us and we too become best. The fruits of good company lead us to enjoy a seven-star life, so we should be very careful while choosing our friends.

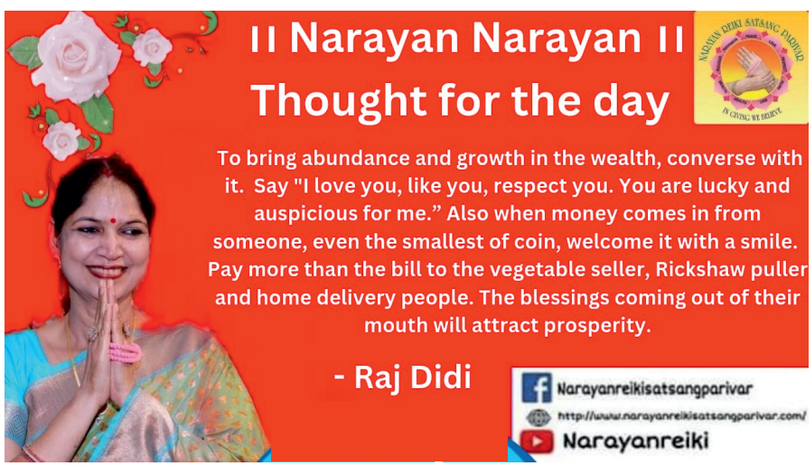

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Meghna Taparia on her birthday (2nd July) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

In this column of Wisdom Box, we bring you some important facts to make life seven-star by making positive changes in life;-

How to keep peace of mind: -

In this context Raj Didi explained through Dada JP Vaswani, we often get upset, disappointed because we have high expectations from others. When our desires and expectations are not fulfilled by others, then we get upset, disappointed.

Dada says if you are living such a life that you are acting in a drama and you are given a role to play, you have to come on stage, play your role and leave. If you live this kind of life, then you will not be disappointed or upset. Your peace of mind will not be disturbed.

Dada explains in detail that you have been given a role to play, you are playing a role. Your fellow artist comes on stage to play his part and shouts at you, utters negative words for you. Are you upset in such a situation...?? You don't get upset because you know very well that he has come to play his role and you also have to play your role properly. You know very well that you have to play this play well because you have to play this play in the best possible way and get the best actor award.

Dada says that all of you also have to play your role properly. This is your need and it is also necessary for you.

How to convert karmic account into good deeds..

Man takes birth on this earth only with his karmic account and leaves this earth with his karmic account. How do we convert our karmic account into good deeds during this lifetime...? Please guide us on all these types of Karmas like Sanchit Karma, Prarabdha Karma, Kriya Maan Karma and Upcoming Karma.

Rajdidi said that whatever deeds we do, they keep on getting added to the list of your deeds. You enjoy happiness as a result of good deeds and you suffer because of the negative deeds. You enjoy happiness, you do not even realize where the time has passed. You should focus on negative deeds so that you do not have to suffer any

more. If you do spiritual practice by being more alert, then the scriptures say that if your deeds are good, then the karmas can definitely be balanced, but you have to suffer.

Narayan Shastra says that if you walk on the path of doing good deeds, then gradually the negative deeds neutralize, you do not have to suffer. What should we do for this...? Every morning when we wake up, the moment our eyes open, we should thank God for showing us another good day, say "Narayan thank you." For all that Narayan has given us: good home – family, life partner, children and all the luxuries, we can thank them one by one or otherwise in a collective prayer. Narayan prayer is to be recited daily; everything is covered in it. We can do all these things while sitting on the bed or while lying down. We start the day by giving gratitude, then say Narayan prayer, after that visualize all the people in our house including helpers. We have to bring all of them one by one in front of us in visualization and ask ourselves what I should do today so that he gets happiness and joy. You have to prepare some dish, you have to help in some work, you have to make some kind of contribution. Either serve others with or get others to serve you. By doing service, the deeds will be balanced or by suffering, the deeds will be balanced. We are NRSP and we have chosen to serve. "Charity Begins at Home" We have to balance our karmas by doing sewa. You have to decide what you have to do and for whom. You talk to someone on the phone, he told you that he has a problem with something, then you have to pray for this person. It is not necessary that you tell him, you can pray in your heart because we have got the opportunity to pray for him, to balance our bad karma. Whenever you hear any negative news, this news has reached you to balance your deeds so that he gets happiness and your bad karma becomes light.

You should have this awareness that no one should be hurt through your speech or behavior or body language. If you hurt someone, then the negative deeds of that person come into your account and your good deeds go into his account. If the other person hurts us, then it is certain that our deeds have been balanced

If you have given any negativity to someone, The Sadhana to get out of it.

You will have to do sadhana to make the behavior of any person positive who has got negativity due to your behavior. Just before sleeping, do it for 5 minutes, 10 minutes, 15 minutes or as long as you can. Close your eyes and sit straight. Take deep breath three times.

We have to bring before us the person with whom we have misbehaved. If we feel that someone else must have suffered our anger with that person, then at the same time we have to visualize all those around us who have suffered our anger. We made a mistake and have to apologize. "Hey Narayan I am sorry, I made a mistake, please forgive me. The moment you say the word sorry – the universe is quick to forgive. This is the specialty of the universe. Immediately it tells you that I have forgiven. In return, we have to say to the person in front –"

"Thank you very much, I love you, I like you, I like you, Narayan blesses you with love, respect, faith, care". The things which we did not give then, we are now giving through blessings. This makes you work in two ways. You sent good things to the universe; you got forgiveness and at the same time your sadhana was done. After this you can sleep, but this should be done immediately before sleeping and should be done peacefully.

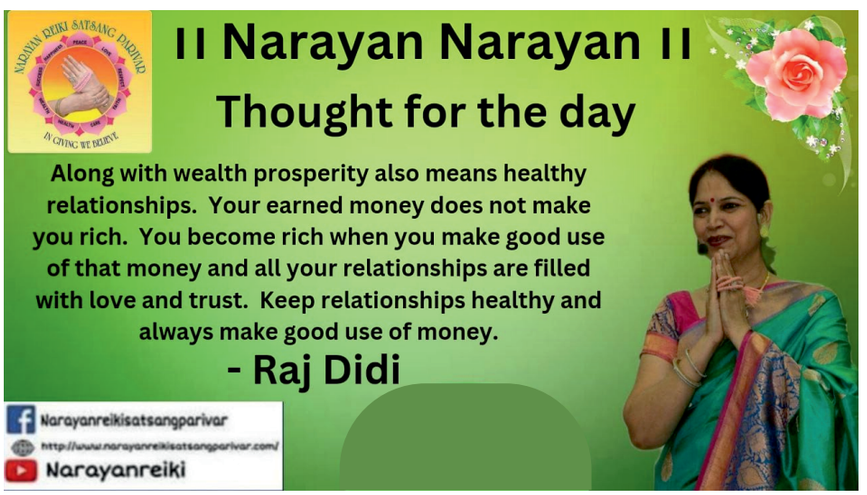

॥ 卐 ॥

Youth Desk

Influence refers to the power to change or affect someone or something- especially the power to cause changes without directly forcing those changes to happen.

Influences not only begin after birth but have their impact right from the child comes into womb. It is the reason why expecting mothers need to be calm, happy, and positive. Even their food intake has influence on the child's development.

As we all know that the first influences in any person's life begin with parents, siblings, grandparents, and other associated people. Though an infant cannot speak but the observation is a major tool which carves his personality. A child born in business family spontaneously learns the tricks of trade, a child of a priest can chant mantras even before he learns to read and write and so on. Even their attitude towards life and people, their manner of handling situations is a byproduct of the influence they had from childhood.

Next in line comes the company a person keeps. The famous quote that - **A man is known by the company it keeps and Company Of wise makes you wiser or otherwise. The biggest examples are - Arjuna had Krishna and Duryodhana had Shakuni.**

In some situations, you cannot be choosers then always remember the Rice grain principle. When winnowing is done the husk is blown away and the grain is what we keep. In the similar manner **ignore the wrong qualities of associated people and focus on their good qualities.**

Till now we have been talking about the influences we go through but why not shape ourselves such that we become an influence to make the earth a better place. This is what Raj Didi is doing and the same is the call of time. **Arise, awake, be aware and help others arise, awake** and be aware.

Once we become virtuous, our aura starts influencing others and slowly the transformation towards Satyug becomes spontaneous. Let us be our best version, give our best to every living being and be the medium to make this world a better place.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Namrata Rathi on her birthday (23rd July) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Children's Desk

Today whatever we are, our samskaras, our habits our character too is the influence of the people who surround us. It is said the company of the wise makes one wiser. Recently a question from a Radiant star who a chartered accountant has enlightened me how good influences too work. His question was- Is it appropriate to claim income tax on the donation made to a trust. Do we accumulate karmas was an eye opener that youth too are aware. This time the topic suggested by **team Satyug- Influences** seemed so appropriate, as this is the season when children move out of the closeness of home to purse their career in their own chosen fields.

Till we are at home we are constantly monitored by our parents, our teachers, our neighbors, friends, by the helpers at home. Time to time guidance is given about whom to keep friendship and whom not to.

There is saying one rotten apple can spoil the whole basket. On the same lines conversely as Didi always says - one good dedicated satsangi can uplift an entire family.

So, we need to be that one good person, in whose contact anyone comes will get uplifted in personality, by character, by habits.

In the Mahabharata, Krishna guided Arjuna and Shakuni guided Duryodhana. The outcome we all know.

Karna also known as Danveer Karna was known for his valor, his large heartedness, his extraordinary warrior abilities. But he chose Duryodhana as his friend. He stood by him against dharma, so perished.

We should be very careful while choosing our Influences.

Today the exposure of electronic media to children is debatable.

But we need to consider that it is this electronic media which is source of vast information. The information ranges from prehistoric to the present. Children learn from the electronic media which gives an positive insight to our variable culture, to the construction skills of our great architectural temples, to our samskaras which has always kept us strong.

So, like Raj Didi says imbibe the best and leave the rest. We need to take the good Influences from people, media, surrounding and leave the rest to Narayana.

Raj Didi always shares how because of the good, positive literature she was exposed to, today she has reached great heights in motivating people to take the right path.

So, as it said always there is two sides of a coin. Positive and negative.

We need to be aware and always take good influences and make our life meaningful.

॥ 卐 ॥

Under The Guidance of Rajdidi

Under the guidance of Raj Didi, is a column wherein we publish how Didi's words have influenced the life of the satsangis and the benefits they have received having followed the NRSP Satsang. The online Satsang is witness to numerous sharing's wherein satsangis share the personality they had before and the personality they have now after attending and imbibing the Satsang. It is a fact that just by listening to Didi, personality development happens, and life progresses towards better, meaningful living. Some such experiences-

Savita Gupta

Didi, earlier also, I have confessed in Narayan Bhavan that even after serving for 39 years in bank with honesty and sincerity, I was not able to get my due increment.

While doing prayers and listening to other's confessions I realized my mistakes.

I used to cut down the salary of my driver and my house help on the pretext of absenteeism.

Also, when I used to go out in group, I tried not to pay and let others pay.

Didi as you say, when you keep with yourself, the amount that belongs to others, nature keeps with itself what belongs to you.

Radiant Star Rohan Gupta

Didi, it has been a complete one year since I am following Narayan Satsang. I am going to share whatever I have learnt here.

1. You guided us to finish the small water bottles that are provided in functions, so that the water is not wasted. I followed that. The result is, I am able to drink enough water first thing in the morning which I was otherwise not able to do.
2. As per your guidance, I have started taking only that much amount of food in my plate, which I am sure to finish. I do not let waste even a single bit. Result is, I can experience 99% relief in my acidity problem.
3. Whenever I take food, I do it with thankfulness and gratitude towards Narayan and fill it with positive energy. The result is- my weight is under control.
4. Earlier, when my near and dear ones used to make fun of me, then I used to speak ill about them. But as you have guided us to use positive words and politeness. Since then, I always pray for them and have peace of mind.
5. Earlier I was not fond of celebrating my birthdays. You have guided that we should thank Narayan on this special day, to have received the human life, and should thank our parents. This time, I served more than 100 cows and about 200 street dogs and this way I made my birthday memorable.

6. Before one year I started following you for some reason. That time, I used to blame others. You taught me to send love, respect, faith, and care filled devdoots.
7. When my wish was fulfilled, I stopped praying in morning sessions. Then later, it happened that even if I tried hard, I was not able to attend the 4:00 AM prayers. Few days back when I confessed in Narayan Bhawan and begged pardon from my mother for raising my voice, I witnessed that I was able to wake up and attend the prayers.
8. I always chant Narayan Prathana whenever I wake up in the morning and before I go to sleep. The result is, I only speak positive words.
9. The biggest jackpot that I have received is self-control. Whether it is in thoughts, actions, deeds, character, honesty, or loyalty.
10. You have taught us that whatever we do, it comes back to us. Many years back, in our family, there was a situation where we were at the suffering end. Today the same condition happened with those people. Instead of making fun of them, I prayed for them and sent LRFC devdoots to resolve their situation.
11. As you say, before starting the prayers in Narayan Bhavan - You are welcome to divine, blissful, miraculous Narayan bhavan. It is true because whatever I have prayed here is being fulfilled.
12. I am sure that I will be a very good human being as I am under your guidance.
13. Didi, as you had once told that you wanted to become a Chartered Accountant, Narayan has made you our CA and you audit our karmas and guides us. Please remain our CA always.
14. In the Narayan Bhawan, when you listen to the confessions and the results they are bearing; you start praying for them. Also take a lesson and make a commitment that you will follow the right path only.

Confession by a satsangi

Didi, I have been making so many mistakes since my childhood, which I didn't have awareness of. If I had not met you, I would have continued to bear the brunt of all the negative words I had sent to the universe. In my childhood, as I was good at academics, I became so proud of myself that I used to believe that I am the best. I started misbehaving with my brothers and my parents. After my marriage, I used to humiliate in laws and husband. The result was, my health, wealth, prosperity, relationships, everything got strained. As I started following you, I realized that it's all my own karmas that are coming back to me. I am trying to improve myself each day.

As is the company, so is the taint

Once a king went hunting in the forest with some soldiers. Hunting they entered the dense forest. They came close to a robber's hiding place. There was a tree and a parrot was sitting on the top of the tree. The parrot started speaking after seeing the king and the soldiers. Catch! Catch!... kill! Kill!.. the king has come. They will have a lot of money and valuable ornaments. Come quickly, come quickly, hearing this the dacoits came out. When the king and the soldiers saw the dacoits, they started running. Running away from the dacoits covering a long distance, they reached a place where there was another tree. The King stood there to take a breath. There was another parrot on that tree. Seeing the King, that parrot also started saying, "Hey Rajan! You are welcome to our Sadhu Maharaj's ashram. Please Drink water, take rest." The king was very surprised.

So much difference in the behavior of both the creatures of the same species? The king went into the hut and met the saint and narrated the incident to the saint. And then asked why there is so much difference in the behavior of these two parrots?

The saint heard the story with great patience and said - O Rajan! No big deal. This is the effect of association. A person learns according to the environment he gets, the company he keeps, that parrot got the company of dacoits, got that environment, so the language of this parrot became such. That is, one becomes like the environment in which he lives. And the parrot here got my company, so he speaks with respect like me. The parrot there got the company of dacoits, so that parrot speaks the language of dacoits.

From this story, we get an idea that whenever we associate with anyone in our life, we should do so very thoughtfully, so that we will never be harmed. It is said, "As is the company, so is the taint". The Fruit of Greed is always Bad.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Kedar Rathi on his birthday (29th July) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Fruit of association

In a village, a man had many cows. He used to earn his living by selling the milk of cows. Once many Mahatmas came to his village and along with performing the Yagna they wrote “Shri Krishna -Shri Krishna” on the leaves of the trees.

That person used to take the cows for grazing over there every day.

One day a cow ate the leaf with the name Shri Krishna written on it. In the evening, when all the cows went back to their pen, that cow started saying - Shri Krishna Shri Krishna. All the cows asked him, “What are you saying?”. The cow then said, I have eaten the leaf with the name of Shri Krishna, and it seems that this name has got imbibed within me and my ego has vanished.

Saying this, the cow repeatedly chanted the name - Shri Krishna Shri Krishna. The rest of cows decided to throw it out of their herd. When the man came in the morning, he saw that the cow was standing outside the pen. The man thought – lest all cows get sick because of one cow, the person left that cow in the forest at night. A thief found that cow in the forest. He took it to a faraway village and sold it to a farmer.

That farmer also observed that this cow kept chanting Shri Krishna Shri Krishna throughout the day. Now the farmer started living by selling the milk of that cow. With the effect of the name of Shri Krishna, the milk of that cow was like nectar. People from far and wide started coming to buy the milk of that cow and the economic condition of that farmer’s house started improving.

One day the king’s minister was passing by, when he stopped at the Farmer’s house. The farmer gave him the milk of that cow. After drinking the milk, the minister said to the farmer, “we never have had such milk.” The farmer said, “This is the milk of this cow, which keeps chanting Shri Krishna Shri Krishna all day long.”

The ministers were surprised to see the cow chanting the name of Shri Krishna and returned to the palace.

In those days, the queen of that city was sick, and even after the treatment of numerous doctors, she did not get well. The Rajguru said that only God can save the queen. Then the minister told the king about the cow. The king did not believe this and went to the farmer with the minister and was surprised to see that cow. The king said to the farmer, “Give me this cow.” The farmer said to the king with folded hands,

"Your Majesty, the condition of my house has improved because of this cow, if I give this cow to you, I will start starving again." The king said, "I will give you so much money in exchange of this cow that your poverty will go away. Then the farmer happily gave the cow to the king."

Now that cow lived with the queen in the palace and used to chant the name of Shri Krishna. By listening to the chanting of Shri Krishna's name and drinking the nectar-like milk of that cow, the queen's health started improving and gradually she recovered.

Now the cow started living with the king in the royal palace, in the company of that cow, the whole village started chanting the name of Shri Krishna.

With the influence of the name Shri Krishna, an animal started enjoying the pleasures of the Raj Mahal(palace). Similarly, chanting the name of Shri Krishna, a human being can cross over the ocean of existence.

Moral: The cow chose the refuge of Shri Krishna, the life of all those who came in the company of the cow improved. That's why choose such a company by which you lift your life and become such a person, in whose company everyone wants to be, the effect of your company should have a good impact on others.

Ram And Shyam

Ram and Shyam were two brothers, both studied in the same school and even in the same class. Ram was promising and sincere in studies while his brother Shyam used to avoid studying and used to find many excuses not to study. Ram's friends were students and Shyam's friends were non-studious and stealers.

Ram used to tell his brother Shyam to avoid those friends, but Shyam scolded him and told him to mind his own business. Shyam's friends would leave home to go to school and would go somewhere else.

Sometimes they used to sit in the park, sometimes go somewhere to eat and drink, and sometimes watch movies. Shyam also came into their company, and he too gradually avoided going to school. Shyam also used to eat, drink and roam outside with those friends.

Ram was very worried about the cheating Shyam did. Shyam was also informed that he would fail in the exam, but Shyam did not listen. One day Shyam was going to

school, his friends met him, and they told him not to go to school. We will all celebrate our friend Hari's birthday by going out, eating, drinking, and having a lot of fun. At first Shyam refused, but on repeated persuasion of his friends, he went with them. Shyam and his friends partied a lot and did not go to school that day. He and his friends used to do this type of work continuously.

There was an examination in which Shyam and his friends could not succeed and failed. As usual Ram got first place this time also. Shyam took the marksheet to his home. His parents saw the marksheet and became very sad.

They felt sad because one of their son's is so good at studies and the other is so useless. Shyam could not pass in any subject. Shyam's parents were very sad, but they did not say anything to anyone.

They thought that now what will they tell other people that their son could not pass in even a single subject. In this way, Shyam saw his parents very worried and sad, because of which he also felt sad. Shyam assured his parents that he would be successful in the next examination. Shyam disassociated himself from those of his friends who stood in his way to success.

Leaving all those deceitful friends, he concentrated on his studies. The result was that within a year of hard work, he was not only successful in the examination but also got the top position in the school. His parents became very happy and congratulated their son, Shyam, by hugging him.

Shyam had realized that the company you keep, will get the same results.

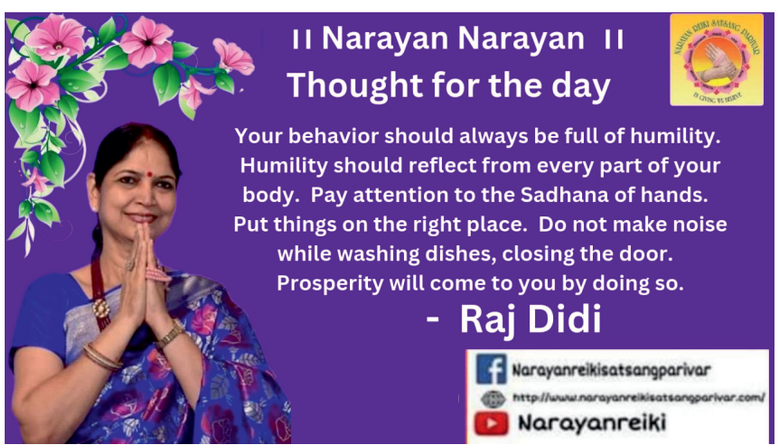

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com